नाना साहब की पुत्री

पाठ का सार / प्रतिपाद्य

प्रस्तुत पाठ में देश के उन महान और वीर लोगों के बारे में बताया गया है, जिन्होंने 1857 में अपने योगदान से पहली स्वतंत्रता की लड़ाई के बीज बोए। इसमें नाना साहब तथा उनकी पुत्री मैना का उल्लेख मिलता है। नाना साहब ने आज़ादी का बिगुल बजा दिया था। इसके लिए उन्होंने अपना घर छोड़ दिया। ऐसी ही साहसी उनकी पुत्री थी। उसने अपने घर के लिए स्वयं की आहुति दे दी मगर भागी नहीं। वह एक अदम्य साहस वाली बालिका थी।

महत्वपूर्ण घटनाएँ

- 1857 के विद्रोह के असफल होने का उल्लेख है।
- धुंधूपत नाना साहब का कानपुर छोड़कर चले जाना।
- अंग्रेज़ों द्वारा बिठूर के राजमहल में लूटपाट।
- लण्डन के मन्त्रीमण्डल द्वारा नाना से जुड़ी हर याद को मिटाने का आदेश।
- टाइम्स पत्रिका द्वारा भारत-सरकार की नाना को ना पकड़ने पर आलोचना करना।

मैना की चारित्रिक / स्वभावगत विशेषताएँ

- सरल
- कुशल
- विनम्र
- साहसी
- दृढ़-निश्चयी
- अपने देश से प्रेम करनेवाली
- तर्क सहित अपनी बात को स्पष्ट करने वाली

पाठ से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

- यह पाठ शिक्षा देता है कि हमें अपनी क्षमताओं का पूरा लाभ उठाना चाहिए।
- यह पाठ हमें अपने देश तथा लोगों का आदर करने की सीख देता है।
- यह पाठ हमें मैना के जीवन से प्रेरणा लेने की सीख देता है।
- यह पाठ हमें अपने गौरवपूर्ण इतिहास के दर्शन करवाता है।